Topic 31 — कमुकान्तो आत्मनेपदी ४ वादिगण २

५७८ चङ्युपधाया ह्रस्वः

चङ्परे णौ यदङ्गम्, तस्योपधाया ह्रस्वः स्यात् ।

चङि ।

चङि परे अनभ्यासस्य धात्ववयवस्यैकाचः प्रथमस्य द्वे स्तः, अजादेर्द्वितीयस्य ।

चङ् परे होने पर अभ्यास भिन्न धातु के अवयव प्रथम एकाच् को द्वित्व होता है और अजादि के द्वितीय एकाच् को द्वित्व होता है । उदाहरण के लिए 'अ कम् अ त' में धातु का अवयव प्रथम एकाच् व्यपदेशिवद्भाव से 'कम्' है । यह अभ्यासरहित है और इससे परे 'चङ्' भी है । अतः प्रकृत सूत्र से द्वित्व होकर 'अ कम् कम् अ त' रूप बनेगा । अभ्यास कार्य करने पर 'अ च कम् अ त' रूप बनता है ।

सन्वल्लघुनि चङ्परेऽनग्लोपे ।

चङ्परे णौ यदङ्गम्, तस्य योऽभ्यासो लघुपरः, तस्य सनीव कार्यं स्यात्, णावग्लोपेऽसति ।

सन्यतः ।

अभ्यासस्यात इत् स्यात् सनि ।

सन् परे होने पर अभ्यास के अकार के स्थान पर इकार होता है । उदाहरण

के लिए 'अ चे क्रम अत' में एकवचन में सन्वत् भाव हुआ है, अतः अभ्यास 'च' के अकार को इकार होकर 'अचीकमत' रूप बनता है।

दीर्घो लघोः।

लघोरभ्यासस्य दीर्घः स्यात् सन्वद्भावविषये। अचीकमत। णिङभावपक्षे (वा०) कमेश्च्लेश्चङ् वाच्यः। अचकमत। अकामयिष्यत, अकमिष्यत। अय गतौ। अयते।

उपसर्गस्यायतौ।

अयतिपरस्योपसर्गस्य यो रेफस्तस्य लत्वं स्यात्। प्लायते। पलायते।

अय् धातु के परे होने पर उपसर्ग के रकार के स्थान पर लकार आदेश होता है। उदाहरण के लिए लट् लकार के प्रथमपुरुष एकवचन के प्रपूर्वक 'अय्' धातु का 'प्रायते' रूप बनता है, यहाँ 'प्र' उपसर्ग है और उससे परे 'अय' धातु है। अतः 'प्र' के रकार को लकार होकर 'प्लायते' रूप सिद्ध होता है। इसी प्रकार 'परायते' में भी 'परा' उपसर्ग के रकार को लकार होकर 'पलायते' रूप सिद्ध होगा।